IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए कंप्यूटर आधारित शिक्षण तथा मूल्यांकन

डॉ राजेन्द्र प्रसाद

अग्रवाल कॉलेज आफ एजुकेशन

बल्लबगढ़ फरीदाबाद हरियाणा

सारांश

सेवा पूर्व प्रशिक्षण एक ऐसा प्रशिक्षण है जिसका मुख्य उद्देश्य ही है कि राष्ट्र व समाज के लिए ऐसे शिक्षक तैयार करना जो कि विद्यार्थियों को उनकी रूचि एवं आवश्यकता अनुसार अधिगम करा सकें तथा उन्हें स्वयं करके सीखने हेतु स्व प्रेरित कर सकें जिससे विद्यार्थी स्वयं ही ज्ञान का सृजनकर्ता बन सकें।

बी एड (बैचलर इन एजुकेशन) शिक्षा में स्नातक एक द्विवर्षीय शिक्षक प्रशिक्षण है जो कि पूर्व में एक वर्षीय होता था। इसमें स्नातक व स्नातकोत्तर उत्तीर्ण विद्यार्थी प्रवेश ले सकते हैं। इस प्रशिक्षण में विभिन्न अनिवार्य व वैकल्पिक तथा 2 शिक्षण विषयों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को पूर्व माध्यमिक माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की अधिगम गति व स्तर को समझ कर पाठ्यवस्तु के शिक्षण एवं उसके मूल्यांकन के तरीके को प्रशिक्षणार्थी सीखते हैं। जिसके लिए उन्हें विभिन्न प्रकार के आधुनिक तथा तकनीक युक्त (कंप्यूटर आधारित) तरीकों को सीखना अत्यंत आवश्यक है।

इसी को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निर्माताओं ने एक प्रश्न पत्र के रूप में (आई.सी.टी. की आलोचनात्मक समझ) को रखा है। इसके द्वारा प्रशिक्षणार्थी शिक्षण में प्रयोग होने वाले कंप्यूटर के विविध रूपों का सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक अधिगम करते हैं।

इस अध्ययन में उसी का प्रस्तुतीकरण करवा कर उसका मूल्यांकन किया गया है जिसमें निष्कर्ष अता पता चला कि विद्यालयों में शिक्षण एवं मूल्यांकन में कंप्यूटर तकनीक का प्रयोग कैसे किया जाए।

प्रस्तावना

विगत कुछ वर्षों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुत कुछ परिवर्तन आया है। जिसमें विशेष रूप से स्वयं करके सीखने पर जोर दिया जा रहा है, इसके कारण शिक्षक एक निर्देशक व मार्गदर्शक की भूमिका में होता है उसे अपने विद्यार्थियों को केवल अधिगम के अवसर उपलब्ध कराना है जिसमें वह से भागी होकर अपना ज्ञान वर्धन कर उसे स्थाई तो दे सके। इस प्रक्रिया में कंप्यूटर वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

इसलिए सेवा पूर्व प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों को कंप्यूटर की शिक्षा दी जाती है जिसका उपयोग में स्वयं सीखने तथा प्रशिक्षण के पश्चात अपने शिक्षण विद्यालयों में विद्यार्थियों के अधिगम तथा उनके मूल्यांकन हेतु सीखते हैं।

कंप्यूटर आधारित शिक्षण

राष्ट्रीय फोकस समूह द्वारा शैक्षिक तकनीकी के आधार पत्र में कहा गया है कि "शिवापुर शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान -१- शिक्षकों को उन लचीले मॉडलों से परिचित कराना जो पाठ्यक्रम के लक्ष्यों तक पहुंचने में सक्षम हों।

२- मीडिया और तकनीकी के माध्यमों से होने वाली अध्ययन पद्धतियों से परिचित करवाना जिससे शिक्षक के शिक्षण अधिगम के कार्यक्रमों का यह अभिन्न अंग बन सके।

इसलिए कंप्यूटर आधारित शिक्षण को शिक्षण प्रक्रिया का अनिवार्य अंग बनाना आवश्यक है फिर चाहे वह प्राथमिक स्तर के विभिन्न विषय हो या माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के विषय क्यों ना हों।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१- प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सीखने सिखाने की प्रक्रिया में कंप्यूटर का उपयोग करना सिखाना।

२- प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत दक्षता का विकास करना।

३- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को सरल सुगम और आनंदमयी बनाना।

४- प्रशिक्षणार्थियों को मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों को अपनाना सिखाना।

आवश्यकता

बीसवीं शताब्दी का समापन हो रहा था और उसी समय कंप्यूटर युग का शुभारंभ भी हो रहा था। इस तरह **21** वी शताब्दी के शुरुआत में ही कंप्यूटर से काम होने लगे जिसके कारण सभी को इसका ज्ञान होना आवश्यक हो गया। शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं रहा। **1** अप्रैल **2010** से शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने के बाद से सी.सी.ई.**(**सतत एवं व्यापक मूल्यांकन**)** की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। यह प्रक्रिया बढ़ते बढ़ते शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं तक पहुंच गई। शिक्षक शिक्षा के विषय में **(**एन.सी.एफ.२००९ फॉर टीचर एजुकेशन**)** मैं कहां गया है कि वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की सबसे बड़ी कमी उसकी मूल्यांकन प्रणाली है। शिक्षक शिक्षा का क्षेत्र व्यापक है जिसमें विविध बिंदु आते हैं जिनका मूल्यांकन और उसका पृष्ठ पोषण देकर प्रशिक्षणार्थियों को उन्हें प्रक्रिया की मूल भावना एवं उसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया से परिचित कराना है।

इस अध्ययन में बी.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों को **10** समूहों में बांटा गया। इन सभी समूहों ने अपने-अपने समूह में कार्य कर के विषय वस्तु पर चर्चा की और पी.पी.टी. **(**पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन**)** बनाया तथा प्रस्तुतीकरण भी दिया। जिससे उन्हें उनकी स्वयं की दक्षता का विकास तथा शिक्षण अधिगम तकनीक प्रक्रिया की शिक्षा मिली। इससे स्व मूल्यांकन तथा साथियों का मूल्यांकन हुआ जिससे सभी समूहों ने शेष **9** समूहों में से तीन को श्रेष्ठ बताया।

उनकी श्रेष्ठता का आधार था-

१- प्रस्तुतीकरण की शैली।

२- समूह का समन्वय।

३- पी.पी.टी. निर्माण।

४- समूह के प्रश्नों के उत्तर।

शोध प्रक्रिया

अध्ययन विधि

इस अध्ययन की विधि सर्वेक्षण विधि है।

न्यादर्श

न्यादर्श में अग्रवाल कॉलेज आफ एजुकेशन बल्लभगढ़ फरीदाबाद हरियाणा में बी.एड. प्रथम वर्ष में अध्ययनरत **60** विद्यार्थियों को शामिल किया गया। जिनके **10** समूह बनाए गए। इनमें से सभी ने अपने-अपने समूह में कार्य करके विषय वस्तु को पढ़ा,समझा और उसी पर पी.पी.टी. बनाया। लेकिन प्रस्तुतीकरण के दिन कुछ प्रशिक्षणार्थी अनुपस्थित रहे और जिस दिन निर्धारण मापनी भरवाई गई उस दिन भी कुछ प्रशिक्षणार्थी अनुपस्थित रहे। इस प्रकार अध्ययन के लिए आंकड़े केवल **50** प्रशिक्षणार्थियों पर आधारित हैं।

उपकरण

इस अध्ययन के लिए स्वनिर्मित पांच बिंदुओं के एक निर्धारण मापनी का उपयोग किया गया, जिसमें **20** कथन थे जो कि अध्ययन के चार उद्देश्यों पर आधारित थे।

अध्ययन का विश्लेषण

पी.पी.टी. प्रस्तुतीकरण के पश्चात निर्धारण मापनी भरवाई गई जिसके आधार पर प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया जो निम्न प्रकार है।

१- *उद्देश्य*

कंप्यूटर क्षमता का विकास

तो था किंतु हुए कभी इस प्रकार उसका उपयोग नहीं किया था। जिसके लिए उन्हें कुछ कथन दिए गए जिससे पता चल सके कि उनकी कंप्यूटर क्षमता का विकास हुआ है या नहीं।

इस उद्देश्य का विश्लेषण करने के पश्चात पता चला कि **98%** प्रशिक्षणार्थियों को कंप्यूटर पर पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन बनाना एवं प्रस्तुत करना अच्छा लगा। किंतु इससे कंप्यूटर का उपयोग करने में सभी का आत्मविश्वास नहीं बढ़ सका। केवल **64** परसेंट प्रशिक्षणार्थी ही इस बात से पूर्णतः सहमत थे तथा **17** परसेंट सहमत थे कि कंप्यूटर का उपयोग करने में उनका आत्मविश्वास बढ़ा है जबकि **9%** प्रशिक्षणार्थियों को पता ही नहीं था एवं **10%** प्रशिक्षणार्थी इससे सहमत थे। सभी प्रशिक्षणार्थी इस बात से सहमत हैं कि अन्य क्षेत्रों एवं विषयों में भी कंप्यूटर द्वारा प्रस्तुतीकरण लाभदायक होगा।

2- *उद्देश्य*

व्यक्तिगत क्षमता का विकास

किसी भी प्रशिक्षणार्थी ने पूर्व में कभी पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन नहीं किया था। अता उन्हें जब इस कार्य के रूप में पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन बनाने के लिए कहा गया तो उनमें आत्मविश्वास की कमी थी। किंतु प्रस्तुतीकरण करने के पश्चात उन्हें बहुत अच्छा लगा। जिसमें **22%** प्रशिक्षणार्थी पूर्णता सहमत थे कि प्रस्तुतीकरण से पहले यह कार्य बोस लग रहा था **29%** सहमत है **9%** कह नहीं सकते थे **26%** असहमत थे तथा **14%** पूर्णतः असहमत थे। केवल **4%** प्रशिक्षणार्थी ही ऐसे थे जो इस गतिविधि को पुनः करना नहीं चाहते थे। लगभग **97%** को यह विश्वास था कि अगली बार वे और बेहतर ढंग से प्रस्तुतीकरण कर पाएंगे। **86%** प्रशिक्षणार्थी इस बात से सहमत अथवा पूर्णतः सहमत थे कि वे इसका उपयोग अपने विद्यालय में भी कर पाएंगे जबकि **14%** को इस बात का विश्वास नहीं था। शिवाय **2%** प्रशिक्षणार्थी के सभी ने साथियों का प्रस्तुतीकरण देखकर नई बातों को सीखा। **98%** प्रशिक्षणार्थियों का मानना था कि प्रस्तुतीकरण करने से उनकी झिझक दूर हुई।

3- *उद्देश्य*

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर एवं आनंददायी बनाना

शिवा पूर्व प्रशिक्षणार्थी भविष्य में जब शिक्षक बनेंगे तो उन्हें शिक्षण अधिगम की अलग-अलग विधाओं को जानना आवश्यक है क्योंकि उन्हें जो काट दिया गया था उसमें तकनीक का उपयोग एवं समूह कार्य करना सम्मिलित था। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने यह माना कि उन्हें शिक्षण अधिगम की नई तकनीक जानने का अवसर मिला तथा यह प्रणाली पारंपरिक प्रणाली से बेहतर है। समूह में प्रस्तुतीकरण करना भी सभी को अच्छा लगा। केवल **2%** प्रशिक्षणार्थियों को यह नवाचार अच्छा नहीं लगा जबकि **2%** प्रशिक्षणार्थी निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सके बाकी सभी को बहुत अच्छा लगा। **2%** प्रशिक्षणार्थियों ने यह भी माना की विषय वस्तु की समझ बनी या नहीं यह वह नहीं कह सकते और **98%** ने माना कि विषय वस्तु की समझ बनाने में उन्हें बहुत अधिक मदद मिली।

4- *उद्देश्य*

मूल्यांकन के तरीके

प्रस्तुतीकरण के पश्चात प्रशिक्षणार्थियों से स्वयं के प्रस्तुतीकरण के बारे में अभिमत मांगा गया उनके साथियों ने भी उनका मूल्यांकन किया। साथ ही शिक्षक द्वारा भी उनके प्रस्तुतीकरण का अभिमत दिया गया। इसमें **53%** प्रशिक्षणार्थी इस बात से पूर्णतः सहमत थे की प्रस्तुतीकरण करने के पश्चात क्या कमियां रह गई यह बात उन्हें स्वयं महसूस हुई जबकि **31%** प्रशिक्षणार्थी इस बात से सहमत हैं। **5%** प्रशिक्षणार्थियों को पता नहीं चला **9%** असहमत थे जबकि **2%** पूर्णतः असहमत थे। इस प्रकार कुल **16%** प्रशिक्षणार्थी एवं मूल्यांकन सही तरह नहीं कर पाए। **95%** प्रशिक्षणार्थियों को साथियों का मूल्यांकन करना अच्छा लगा लेकिन जब साथियों ने उनका मूल्यांकन किया तो केवल **91%** परीक्षार्थियों को ही अच्छा लगा। **98%** प्रशिक्षणार्थियों को मूल्यांकन करने का यह तरीका केवल प्रश्न उत्तर लिखने की अपेक्षा बेहतर लगा।

निष्कर्ष

इस अध्ययन का विश्लेषण करने के पश्चात शोधकर्ता को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

१- अध्ययन में सम्मिलित सभी प्रशिक्षणार्थियों को कंप्यूटर पर पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन बनाना एवं प्रस्तुतीकरण करना अच्छा लगा तथा उन्होंने माना कि इसका उपयोग अन्य विषयों एवं क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।

२- कंप्यूटर का उपयोग करने में **81%** प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ा। इसलिए इस प्रकार के आयोजन बार-बार करने से सभी प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ सकता है।

३- **51%** प्रशिक्षणार्थियों को पहले यह कार्य बोझ लग रहा था किंतु प्रस्तुतीकरण के पश्चात **95%** से अधिक प्रशिक्षणार्थियों ने यह माना कि प्रस्तुतीकरण करने से उनकी झिझक दूर हुई और वे पुनः इन गतिविधियों को करना चाहेंगे एवं अगली बार बेहतर ढंग से इसे प्रस्तुत करेंगे।

४- सभी प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि उन्हें शिक्षण अधिगम की यह नई प्रणाली जानने का अवसर मिला एवं यह प्रणाली पारंपरिक प्रणाली से बहुत ही बेहतर लगी।

५- **84%** प्रशिक्षणार्थी सा मूल्यांकन कर पाए **95%** को साथियों का मूल्यांकन करना अच्छा लगा **91%** को ही साथियों द्वारा मूल्यांकन करवाया जाना अच्छा लगा **98%** प्रशिक्षणार्थियों को मूल्यांकन का तरीका पारंपरिक तरीके से बेहतर लगा।

*****संदर्भ*****

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन **2009**।

शैक्षिक तकनीकी

राष्ट्रीय फोकस समूह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

google.com।